ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 112-114

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिला श्रमिकों की समस्याएँ : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

रश्मि

शोध अध्येत्री– समाजशास्त्र विभाग, बी० आर० अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार) भारत

Received-29.10.2023, Revised-05.11.2023, Accepted-10.11.2023 E-mail: ranjeetrashmi75@gmail.com

सारांश: ***किसी भी समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिये नारी शक्ति का विशेष महत्व है। नारी, स्वंय एक शक्ति ही नहीं एक जननी भी हैं और माँ की गोद बच्चें की पहली पाठशाला होती है। माँ की गोद में मिली शिक्षा ही किसी समाज और राष्ट्र के निर्माण के लिये आवश्यक हैं, लेकिन महिलाओं के साथ सदियों से हो रहे भेदभाव से विकास की प्रक्रिया को ठेस पहुँचती है। महिलाओं के साथ भेदभाव समाज में परिवार से लेकर विभिन्न स्तरों पर होता है। कामकाजी महिलाओं का एक बड़ा भाग असंगठित क्षेत्र में महिला श्रमिक के रूप में कार्यरत हैं,जहाँ काम करने वाली महिला श्रमिकों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। महिलाएँ समाज में लाज के डर से, शिक्षा के अभाव में, असुरक्षा के भय से, समाज में समुचित सहयोग न मिलने के कारण, साक्ष्य के अभाव व कारगर कानून के अभाव में चुपचाप अनेक प्रकार की समस्याओं को झेलती रहती हैं।***

कुंजीभूत शब्द– नारी शक्ति, पहली पाठशाला, जननी, असंगठित क्षेत्र, कामकाजी, महिला श्रमिक, आर्थिक संस्कृति, कारगर कानून।

हाल के कुछ दशकों से महिलाओं ने बड़ी तादाद में घरेलू दायित्वों के अतिरिक्त कारखानों, बगानों, खादानों, सरकारी कार्यालय छोटे एवं बड़ें पैमानें के उद्योगों, विनिर्माण एवं असंगठित क्षेत्र के पापड़, कालीन, जरी, ईंट भट्ठा, सिल्क एम्ब्रोइडरिंग, टेलरिंग, बीड़ी निर्माण कार्य तथा कृषि कार्य में एक श्रमिक की नई भूमिका के रूप में अपनी पहचान बनाना शुरू कर दिया। महिलाओं की इस नई भूमिका का जन्म इनके प्रति बदली हुई सामाजिक सोच, कमजोर पड़ते रूढ़िवादी दृष्टिकोण, पनपती नई आर्थिक संस्कृति एवं परिवार पर बढ़ते हुए आर्थिक दबाव का परिणाम है। आर्थिक जगत में महिलाओं के इस प्रवेश ने सूक्ष्म स्तर पर परिवार निर्माण एवं व्यापक स्तर पर राष्ट्र निर्माण को गति प्रदान की।

सर्वप्रथम यहाँ हम असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिला श्रमिकों की प्रमुख समस्याओं की विवेचना करेंगे, जो इस प्रकार है –

1. रोजगार की समस्या – असंगठित महिला श्रमिकों की एक समस्या यह है कि उन्हें नियमित रूप से रोजगार नहीं मिल पाता और बेकारी एवं अल्प–रोजगार की स्थिति में रहना पड़ता है। इनका सारा जीवन बेकारी, गरीबी, शोषण, उत्पीड़न और अनिश्चितता से भरा हुआ है। कुछ स्थानों पर तो इन महिला श्रमिकों की दशा गुलामों जैसी है। कम उम्र की महिला श्रमिकों का शारीरिक शोषण भी होता है। रोजगार की दृष्टि से अस्थायी श्रमिकों की दशा तो और भी खराब है तथा इन्हें वर्ष में 3–6 महीने बेकारी की स्थिति में व्यतीत करने पड़ते हैं। फलस्वरूप इनमें बेरोजगारी और बढ़ जाती है। कृषि में मशीनीकरण से भी बेकारी में वृद्धि हुई है।

2. अल्प आय – असंगठित क्षेत्र में कार्यरत अधिकांश महिला श्रमिकों को वर्ष के एक बहुत बड़ें भाग में बेकार रहना पड़ता है और यहाँ तक कि काम के दिनों में इन्हें मजदूरी भी बहुत कम मिलती है। इन्हें कुछ मजदूरी नकदी में और कुछ वस्तुओं के रूप में भी मिलती है। यद्यपि इस सन्दर्भ में वर्तमान समय में सरकार ने इनके लिए न्यूनतम मजदूरी तय कर दी है। फिर भी इसका पालन बहुत तक लोग ही कर रहे हैं। स्वरोजगार करने वाली महिलाओं की भी आमदनी वर्तमान ऑनलाईन बाजार व्यवस्था के कारण प्रभावित हुई है।

3. कार्य की दशाएँ – कम मजदूरी के अतिरिक्त महिला कृषक श्रमिकों को बहुत कठिन परिस्थितियों जैसे कड़ी धूप या भारी वर्षा में कठोर परिश्रम करना होता है। इनके काम के घण्टे अनिश्चित और अनियमित होते हैं तथा इन्हें छुट्टी व अन्य सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होती हैं। इसका प्रतिकूल प्रभाव इनके स्वास्थ्य, कार्य–क्षमता और जीवन पर पड़ता है।

4. निम्न जीवन–स्तर – असंगठित क्षेत्र में महिला श्रमिकों का जीवन–स्तर काफी निम्न है। कम आय के कारण ये लोग उपभोग पर बहुत कम खर्च कर पाते हैं और अपनी अनिवार्य आवश्यकताएँ भी सरलता से पूरी नहीं कर पाते। एक अनुमान के अनुसार ये अपनी आय का लगभग 77 प्रतिशत भाग खाद्य–पदार्थों पर, 6 प्रतिशत वस्त्रों पर, 8 प्रतिशत ईंधन व रोशनी पर तथा 9 प्रतिशत सेवाओं व अन्य मदों पर खर्च करते हैं। सामान्यतः ये लोग मोटा अनाज, जैसे–ज्वार, बाजरा एवं मक्का खाते हैं। पौष्टिक पदार्थ जैसे–मांस, मछली, दूध, फल, सब्जी आदि का उपभोग तो ये नहीं के बराबर ही करते हैं। तन ढकने को पर्याप्त वस्त्र एवं रहने को पर्याप्त मकान भी इन्हें उपलब्ध नहीं होते। चिकित्सा व अन्य सुविधाओं का तो इनके जीवन में अत्यन्त अभाव है ही।

5. ऋणग्रस्तता – कम आय के कारण अधिकांश महिला श्रमिक ऋणग्रस्त होते हैं, यहाँ तक कि अपनी अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी इन्हें ऋण लेना होता है। ऋण इन्हें विरासत में मिलता है। ये लोग ऋण में जन्म लेते हैं व ऋण में ही मरते हैं। असम के चाय बागानों के मजदूरों के बारे में प्रो० गाडगिल ने लिखा है, 'उनकी स्थिति गुलामों से बेहतर नहीं थी।'

6. अशिक्षा – देश में असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाली अधिकांश महिला श्रमिकों में अशिक्षा की स्थिति है। ये अधिकांशतः उपेक्षित व दलित जातियों के सदस्य हैं जिनकी सामाजिक स्थिति बहुत नीची होती है और विभिन्न प्रकार से इनका शोषण होता है तथा इन्हें कई अधिकारों से वंचित कर दिया जाता है।

7. संगठन का अभाव – असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिला श्रमिकों की एक समस्या उनमें किसी भी प्रकार के संगठन का अभाव है। वे अशिक्षित, अज्ञानी एवं अनभिज्ञ हैं, साथ ही देश के दूर–दूर भागों में फैले हुए हैं। संगठन के अभाव में उनमें मोलभाव करने

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

की क्षमता नहीं है। अतः वे अपनी मजदूरी बढ़वाने, कार्य के घण्टें नियमति कराने, बेगार बन्द कराने आदि की आवाज तक नहीं उठा पाते। इसके साथ ही भारत में भी निजी क्षेत्र के प्रायः सभी कारखानों, लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, कृषि क्षेत्र, असंगठित उद्योग, इत्यादि के अन्तर्गत भी एक समान कार्य में नियोजित महिला एवं पुरूषों की मजदूरी में अन्तर रखा जाता था। सामान्यतः महिलाओं की मजदूरी पुरूषों से कम होती थी। वैसे तो भारत के संविधान के अन्तर्गत दिए गए राज्यों के नीति निर्देशक सिद्धान्त के अनुच्छेद–39 में कहा गया है कि एक प्रकृति वाले कार्य को करने के लिए नियोजित महिला एवं पुरूषों के मजदूरी भुगतान में लिंग के आधार पर भेदभाव नही अपनाया जायगा। फिर भी यह एक हास्यपद स्थिति थी कि भारत में यह भेदभाव देखा जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य– प्रायः हर क्षेत्र में असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की स्थिति ठीक नहीं है। इन महिलाओं के कार्य पर कितने बिचौलियों, ठेकेदारों की रोजी रोटी चल रही है। इसके अतिरिक्त इन्हें कई तरह की समस्याओं को झेलना पड़ता है, जिसका विवरण भूमिका में प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है कि मुजफ्फरपुर जिला के मुरौल प्रखण्ड के विष्णपुर श्रीराम पंचायत में असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिला श्रमिकों की समस्याओं के संदर्भ में किया जा रहा है।

अध्ययन पद्धति– प्रस्तुत अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति के माध्यम से उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। तथ्यों के संकलन के साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा साक्षात्कार प्रविधि के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र एवं निदर्शन– प्रस्तुत शोध पत्र उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर मुजफ्फरपुर जिला के मुरौल प्रखण्ड के अन्तर्गत विष्णपुर श्रीराम पंचायत के अन्तर्गत असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत महिला श्रमिकों के संदर्भ में किया जा रहा है। इसमें 50 उत्तरदाताओं का चयन प्रस्तुत अध्ययन के लिए किया गया है।

तथ्य विश्लेषण– अध्ययन क्षेत्र से चयनित किये गये उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण इस प्रकार है :

तालिका संख्या : 01

क्या आपको लगता है कि असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाली महिला श्रमिकों का शारीरिक/मानसिक शोषण भी होता है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता		हाँ		नहीं	
कुल सं०	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
50	100	45	90	05	10

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पूछे गये प्रश्न क्या आपको लगता है कि असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाली महिला श्रमिकों का शारीरिक/मानसिक शोषण भी होता है, तो कुल उत्तरदाताओं के 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया हैं जबकि कुल उत्तरदाताओं के 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के असहमति में अपना जबाव दिया है।

तालिका संख्या : 02

क्या आपको लगता है कि असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत महिला श्रमिकों के समक्ष ऋणग्रस्तता की समस्या हमेशा बनी रहती है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता		हाँ		नहीं	
कुल सं०	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
50	100	32	64	18	36

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पूछे गये प्रश्न क्या आपको लगता है कि असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत महिला श्रमिकों के समक्ष ऋणग्रस्तता की समस्या हमेशा बनी रहती है, तो स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं के 64 प्रतिशत ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है, जबकि 36 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि ऐसा नहीं है।

तालिका संख्याः– 03

क्या आप ऐसा मानते हैं कि असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत महिला श्रमिकों अपने अधिकार के प्रति जागरूकता का अभाव होता है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता		हाँ		नहीं	
कुल सं०	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
50	100	40	80	10	20

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पूछे गये प्रश्न क्या आप ऐसा मानते हैं कि असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत महिला श्रमिकों अपने अधिकार के प्रति जागरूकता का अभाव होता है, तो स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं के 80 प्रतिशत ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है, जबकि 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि ऐसा नहीं है।

तालिका संख्याः– 4

क्या आपको ऐसा लगता है कि असंगठित क्षेत्र में कार्यरत अधिकांश महिला श्रमिकों में शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य समस्या देखी जाती है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता		हाँ		नहीं	
कुल सं०	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
50	100	44	88	06	12

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पूछे गये प्रश्न क्या आपको ऐसा लगता है कि असंगठित क्षेत्र में कार्यरत अधिकांश महिला श्रमिकों में शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य समस्या देखी जाती है, तो स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं के 88 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है, जबकि 12 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के असहमति में अपना जबाव दिया है।

तालिका संख्या : 05

क्या आप ऐसा मानते हैं कि असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत महिला श्रमिकों में संगठन का अभाव होने के फलस्वरूप वे अपने विरूद्ध होने वाली शोषणों के प्रति आवाज नहीं उठा पाती हैं ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता		हाँ		नहीं	
कुल सं०	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
50	100	50	100	00	00

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पूछे गये प्रश्न क्या आप ऐसा मानते हैं कि क्या आप ऐसा मानते हैं कि असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत महिला श्रमिकों में संगठन का अभाव होने के फलस्वरूप वे अपने विरूद्ध होने वाली शोषणों के प्रति आवाज नहीं उठा पाती हैं, तो स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं के 100 प्रतिशत ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है।

निष्कर्ष– भारत में असंगठित क्षेत्र में कार्यरत सबसे अधिक महिलाएँ कृषि और खनन जैसे प्राथमिक क्षेत्रों में काम करती है। ईंट के भट्टों जैसे असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं का अनुपात भी कुछ कम नहीं है। इनमें कम आय, ऋणग्रस्तता, रोजगार की अनिश्चितता प्रायः इनके समक्ष बनी रहती है। ईंट भट्टों और खेतों में काम करने वाली ऐसी गर्भवती महिलाएँ भी हैं जो प्रसव के दिन तक आधे–अधूरे भरे पेट से ईंट पाथती रहती हैं और जब प्रसव–पीड़ा होती है, तो साथ की श्रमिक महिलाएँ ही धोती की छावं में प्रसव–क्रिया संपन्न करा देती हैं और एक जीवन का जन्म देने के एक–दो दिन बाद ही ये महिलाएँ फिर से काम पर जुट जाती हैं, क्योंकि रात की रोटी का इंतजाम करना उनका सबसे बड़ा लक्ष्य होता है। ये श्रमिक महिलाओं की वास्तविकता है, जमीनी हकीकत हैं।

अंसगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलायें अर्थव्यवस्था और विकास के हर मोर्चे पर अपना योगदान करती हैं, लेकिन सामाजिक सुरक्षा के अभाव, रोजगार छीन जाने का डर एवं अनिश्चित भविष्य के साये में अपना दिन गुजारती हैं। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि महिलाओं में शिक्षा, जागरूकता, कानूनी जानकारी, चेतनता, अपने अधिकार की जानकारी होना अति आवश्यक है। यदि वे शिक्षित नहीं होंगी, तो उनका शोषण होता रहेगा और यह शोषण कई रूपों में होगा। अतः उन्हें शिक्षित और जागरूक होना ज्यादा जरूरी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. देवी, मंजू असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं पर हिंसा एवं उनका स्वास्थ्य, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 2015.
2. राय, सरोज महिला श्रमिक, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 1999.
3. लॉरेन्स, जास्मिन महिला श्रमिकः सामाजिक स्थिति एवं समस्याएँ, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2003.
4. सचदेव, डी० आर० भारत में समाज कल्याण प्रशासन, किताब महल, इलाहाबाद, नवीनतम संस्करण, 2009.

*****